Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 2, July-2017, ISSN 2230-7540

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता में राष्ट्रीय भावना के विभिन्न स्वरूप

Dr. Saryu Sharma[1]* Dr. Leena Goyal[2]

[1,2] Assistant Professor (Hindi) Sanatan Dharma College, Ambala Cantonment, Haryana

सार - हिन्दी पत्रकारिता का जन्म, स्वाधीनता का संचार, स्वदेश प्रेम का उदय एवं आंग्ल शासन के प्रबल प्रतिरोध हेतु हुआ। इस देश के लगभग सभी मनिषियों ने पत्रकारिता को देश प्रेम के विकास का और स्वतंत्रता प्राप्ति का प्रधान साधन मन था। सत्यप्रियता सत्यकथन अन्याय विरोध के बाद राष्ट्र प्रेम ही वह प्रमुख मूल्य है, जिससे भारतीय पत्रकारिता परवान चढ़ी।

----------X----------

पत्रकारिता जब तक राष्ट्र के लोगों के सुख-दुखों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है तब तक वह सार्थक रहती है। उसके लिए राष्ट्र प्रेम का अर्थ होता है राष्ट्र के विकास के लिए सदैव विकास के रास्तों को ढूंढते रहना। स्वर्गीय पराड़कर जी ने आज के अग्रलेख में यही बात कही थी, उन्होंने लिखा था - हमारा उद्देश्य अपने देश के लिए सर्वप्रकार से स्वातंत्रय उपार्जन है। हम इस बात में स्वतंत्र होना चाहते हैं। हमारा लक्ष्य है कि हम अपने देश का गौरव बढ़ाए। अपने देशवासियों में स्वाभिमान का संचार करें। उनको ऐसा बनाएं कि भारतीय होने में उन्हें अभिमान हो संकोच न हो यह स्वाभिमान स्वतंत्रता देश की उपासना करने से मिलता है जब हमसें आत्म गौरव होगा तब अन्य लोग भी हमें आदर और सम्मान की दृष्टि से देखेंगे। मूल तत्व तो हमारा यही है कि हमारे देश का गौरव बढ़े, भारत और भारतीयता का नाम संसार में आदर के साथ लिया जाए।

स्वतंत्रता पूर्व काल में यह देश प्रेम ही अधिकांश पत्रों की प्रबल प्रेरणा थी। राजा राममोहन राय, महर्षि अरविन्द, स्वामी दयानन्द लोकमान्य तिलक महात्मा गाँधी से लेकर युगलकिशोर शुल्क दुर्गाप्रसाद मिश्र बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त मदनमोहन मालवीय लक्ष्मीनारायण गर्दे पराड़कर, सप्रे खंडिलकर और गणेष शंकर विद्यार्थी तक पत्रकारों ने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर किया। पुरे देश में स्वतंत्रता की चेतना फैलाने का काम इस पत्रकारिता का ही था अंग्रेजी शासनकाल में समाचार पत्र निकालना सबसे महान काम समझा जाता था। जान हथेली पर लेकर जीने और लड़के की प्रेरणा इन पत्रकारों में स्वदेश प्रेम के कारणही आई थी भारतेन्दु अम्बिका दत्त व्यास पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी पंडित माधवप्रसाद मिश्र जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी बालेषण शर्मा नवीन श्री कृष्ण दत्त पालीवाल शिव पूजन सहाय गणेश शंकर विद्यार्थी कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर इत्यादि कितने ही पत्रकारों की तेजस्वी पत्रकारिता का इतिहास देश प्रेम का ही इतिहास है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भारतीय साहित्य में जितना स्थान नहीं मिला होगा उससे कई गुणा अधिक स्थान पत्रकारिता को मिला हिंदी में हिंदी केसरी भारत मित्र नृसिंह अभ्युदय कर्मयोगी प्रताप सिपाही विजय इत्यादि पत्र पत्रिकाओं का स्वर अत्यंत तीखा था। पत्रकारिता देश प्रेम के संस्कार, जनता पर कर रही थी। केवल देश प्रेम के संस्कार ही नहीं कर रही थी, वह सारी जनता को देश की स्वतंत्रता के लिए भी सचेत कर रही थी भारत का क्रांन्तिकारी आन्दोलन बन्दूक और बम के साथ नहीं समाचार पत्रों से शुरू हुआ। भारती का कोई प्रान्त ऐसा नहीं था जिसने राष्ट्रीयता का प्रचार करने वाले पत्रों और पत्रकारों को जन्म न दिया हो स्वतंत्रता आन्दोलन में पत्रकारों के योगदान का इतिहास वस्तुतः स्वतंत्रता आन्दोलन में पत्रकारों के योगदान का इतिहास वस्तुतः स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास है क्योंकि या तो पत्र का संपादक स्वयं स्वतंत्रता का नेता हो गया। नेता ने अपने विचारों को प्रकट करने के लिए पत्र निकालना आवश्यक समझा।

पत्रकारिता के लिए शिवम् या सुन्दरम उतना महत्व नहीं रखते जितना सत्यम रखता है जनता की जानकारी के लिए पत्रकारिता को सबसे पहले सत्य बात कहनी होती है। यही सत्य कथन पत्रकारिता की धूरी है।

www.ignited.in

लगभग सभी देशों की पत्रकारिता के इतिहास से यह पता चलता है कि उसने अपनी प्रारम्भिक अवस्था में सत्ता के अन्याय और आतंक के प्रति घोर संघर्ष किया। 29 जनवरी 877 में जब जेम्स, अगस्ट हिकी, शहिकी बंगाल गजटष्या "कलकत्ता जनरल" निकाल रहा था तभी वह सभी प्रकार के अन्याय और आतंक के विरुद्ध एक दीर्घकालीन परंपरा को जन्म दे रहा था। साहित्य में अनेक बाल जीवन के कटु सत्य शिव और सुन्दरम में लपेट कर प्रस्तुत होते हैं परन्तु पत्रकारिता निर्भीकता से झूठ को झूठ और चोर को चोर कहने का साहस रखती है।

सन् 1980 में केसरी की स्थापना के लिए घोषणा पत्र छपा था। उसमें संपादकों ने लिखा - "हमने यह संकल्प लिया है कि प्रत्येक विषय पर निष्पक्ष रूप से और जिसे सत्य समझते है उस दृष्टि से विचार करेंगे निस्संदेह आज ब्रिटिश शासन की चापलुसी की प्रवृति अवांछनीय है और जनता के हितों के विपरीत है।

बाल-विवाह सती-प्रथा, बाल-मजदूर, अशिक्षा, अस्वास्थ्य, बाढ़ अकाल, सूखा यहाँ तक कि भागलपुर का आँख फोड़ कांड, छतरपुर के कैदियों का मामला, भोपाल गैस त्रासदी, बोफोर्स कांड, हर्षद मेहता प्रतिभूति घोटाला, चीनी घोटाला आदि अनेक अन्याय, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ पत्रकारिता ने सत्य का पक्ष लेकर समय-समय पर आवाज उठाई है।

पत्रकारिता जनता के लिए ही होती है। इसीलिए वह जनता की आवाज है। उसका एकमात्र उद्देश्य सारी जनता का कल्याण होना चाहिए। अविकसित देशों में दबी हुई जनता की आवाज पत्रकारिता के माध्यम से ही प्रस्फूटित होती रही, तो विकसित देशों में प्रबुद्ध जनमानस, पत्रकारिता के माध्यम से ही अपने आपको व्यक्त करता रहा। डॉ. मृदुला वर्मा ने अपनी पुस्तक "हिन्दी की सर्वोदय पत्रकारिता में लिखा है कि पत्रकारिता जनमत को बनाने वाली, उसे विकसित, स्थिर और समृद्ध करने वाली एक शैक्षिणिक ताकत है। हमारा देश जनतंत्र मानने वाला देश है। इस जनतंत्र में जनता महत्त्वपूर्ण है। जनता के सुख-दुःख, आशा-आकांक्षाओं को सरकार तक पहुँचाने का काम पत्रकारिता करती रहती है।"

आज की परिस्थितियों में देश की अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना राष्ट्रीय भावना को मजबूत करना, सामाजिक-आर्थिक बुराइयों को दूर करना, धर्म निरपेक्ष भावना को बल देना, समाज के विभिन्न लोगों को एक दूसरे के समीप लाना, क्षेत्रीय भावना को समाप्त करना और ढांचे को बरकरार रखना ही पत्रकारिता का मूल उद्देश्य है।

भारतीय पत्रकारिता के विकास की कहानी राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है। दोनों एक-दूसरे के सम्पूरक रहे हैं। यदि पत्रकारिता को राष्ट्रीयता ने प्रवर्द्धन दिया तो पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता के विकास की अनुकूल भूमि तैयार की। अतीत में भी पत्रकार देशवासियों के राजनीतिक संस्कार के उन्नयन के प्रश्न पर अपनी अटूट नैतिक आस्था से जुड़े हैं। सार सुधानिधि के संपादकीय व्क्तव्य का विषय है- "हिन्दुस्तानियों का राजनैतिक संस्कार" जिसमें देशवासियों के पिछड़े राजनीतिक संस्कार की चर्चा करते हुए संपादक ने लिखा - "अभी तो बहुतों का संस्कार है कि राजनीति तो उसी को कहते हैं कि बन्दर, सियार, बैल आदि की कथा है जो कि मथुरा की बोली में छपी है। अभी तक प्यारे हिन्दुस्तानी भाइयों में से बहुतों का संस्कार ऐसा जटिल हो रहा है कि केवल अंग्रेजी कपड़े पहने हुए मनुष्य अपना हाकिम समझ लेते है। इन्ही हिन्दुस्तानियों के राजनीति और समाजनीति का संशोधन जैसा समाचार-पत्रों से होता है बैसे दूसरे उपाय में नहीं हो सकता।

पत्रकारिता में जीवन के यथार्थ को अधिकाधिक रूप से समाज को प्रभावित करने की जो क्षमता होती है यदि उसमें पूर्ण सच्चाई हो तो उस क्षमता को और भी प्रोत्साहन प्राप्त होता है और अनिवार्यतः समाज उससे अवश्य प्रभावित होता है। परिणामतः व्यक्ति का निर्णय और उसका चिन्तन परिवर्तित हो जाता है। पत्र-पत्रिकाओं के लेखों और टिप्पणियों में सच्चाई होने के कारण उसका समाज पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। पत्रिकाओं के विषय कुछ भी हों पर उनमें तथ्य और सत्य की संगति होनी चाहिए। देश के स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता को जो योगदान रहा, उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। यदि उस समय पत्रकारिता ने लोक चेतना जगाने का काम न किया होता तो हमारा राष्ट्रीय आंदोलन कभी इतना सशक्त न हो पाता। इस प्रकार इसमें कोई संदेह नहीं रह जाता है कि पत्रकारिता समाज को प्रभावित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पत्रकारिता के आदर्शों का पालन करने वाली सभी साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका समाज के अग्रदूत के रूप में प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. मृदुला वर्मा, हिंदी की सर्वोदय पत्रकारिता, पृ. 27
2. जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, पत्रकारिता के परिवेक्षम, पृ. 132-133
3. एन.सी. पंत, जीतेन्द्र कुमार, मनोज कुमार जोशी, हिंदी पत्रकारिता की रूपरेखा (पत्रकारिता के मूल सिद्धांत) पृ. 14

4. डॉ. रमेश चन्द्र त्रिपाठी पत्रकारिता - सिद्धान्त एवं स्वरूप, पृ. 263।

Corresponding Author

Dr. Saryu Sharma*

Assistant Professor (Hindi) Sanatan Dharma College, Ambala Cantonment, Haryana